अध्ययन सामग्री →

विषय – हिन्दी

संकाय – कला

वर्ग – स्नातकोत्तर

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र – नवम् (उपन्यास)

डॉ० सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा
मोबाईल नं० – 7091260073

संदर्भ – 'त्यागपत्र' उपन्यास से संबंधित प्रश्नोत्तर । भाग - 1

Scanned with CamScanner

अथवा

बड़ी कहानी, छोटा उपन्यास नहीं है और छोटा उपन्यास बड़ी कहानी नहीं है इस दृष्टि से 'त्यागपत्र' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए

उपन्यास और कहानी हिन्दी गद्य साहित्य के दो अलग - अलग विधाएँ हैं। दोनों के सम्मिलित रूप को कथा साहित्य कहा जाता है। दोनों में अनिवार्यतः एक निश्चित कथानक होता है दोनों मानव जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। किन्तु आकार - प्रकार से ही नहीं, अपितु प्रवृत्ति और उद्देश्य से भी उपन्यास और कहानी एक - दूसरे से भिन्न हैं। अंग्रेजी में उपन्यास के लिए Novel शब्द आया है और कहानी के लिए Story। इससे भी यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास और कहानी

Scanned with CamScanner

विधा की दृष्टि से अलग-अलग है। उपन्यास का समान अर्थ है कि उपन्यास। उप का अर्थ होता है सामने या नजदीक और न्यास का अर्थ होता है स्थापना या देखना। संयुक्त रूप में उपन्यास का अर्थ हुआ जीवन को नजदीक से प्रस्तुत करना। उपन्यासकार प्रेमचंद ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए लिखा है- "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ मानव चरित्र पर प्रकाश डालना ही उपन्यास का मूल कार्य है" जयशंकर प्रसाद की मान्यता "उपन्यास में मानव चरित्र का चित्रण नहीं होता वरन सम्पूर्ण वातावरण और घटनाओं का चित्रण होता है।" जैनेन्द्र कुमार की दृष्टि में उपन्यास आत्मपीड़न की ही साधना है। चूंकि जैनेंद्र व्यक्तिवादी चेतना के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार रहे हैं। इसीलिए उन्होंने अपने उपन्यासों के संबंध में लिखा है कि - आत्मपीड़न में ही परमात्मा बसता है मेरे आत्मपीड़न को ही साधन है इसीलिए मैंने उनमें कामवृत्ति की प्रधानता रखी है। दूसरे व्यक्तिवादी उपन्यासकार अज्ञेय जी की धारणा है- "अपने उपन्यासों में स्वयं ही और उनमें विश्लेषण अपने ही व्यक्ति विकास का सिंहावलोकन है" डॉ० श्याम सुन्दर दास का कहना है- "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है" उक्त परिभाषाओं से इतना स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन के संपूर्ण चित्र को प्रस्तुत करना ही उपन्यास है।

दूसरी ओर कहानी की प्रवृतियों के कुछ परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाती है अंग्रेजी उपन्यास में एच.जी.वेल्स ने कहा है कि "कहानी वह कथा है जिसे एक या दो घंटों में पढ़ी जा सकती है।" प्रेमचंद का कहना है कि "कहानी वह एक रमणीय उद्यान नहीं है, जिसमें भांति-भांति के फूल, बेल, बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधा का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टि गोचर होता है" निष्कर्ष यह है निकलता है कि कहानी मानव जीवन का एक खंड है, यह जीवन के एक ही घनीभूत क्षणों को उभारत करती है। यह छोटी होकर भी स्वतः एक सम्पूर्ण जीवन का चित्र होता है और कहानी में खंडित जीवन का

का होता है। संपूर्ण जीवन का चित्र होने के कारण उपन्यास के कथानक में शिथिलता होती है, इसमें अनेक घटनाओं का समावेश रहता है। पात्रों की बहुलता होती है और उपन्यासकार विस्तार से वर्णन करता है। दूसरी ओर संक्षिप्तता ही कहानी का प्राण तत्व है इसमें विस्तार संभव नहीं है। इसमें पात्रों की बहुलता नहीं होती। ऊपर की कसौटी पर रख कर देखने से पहली दृष्टि में 'त्यागपत्र' ही क्या जैनेन्द्र के अन्य उपन्यास 'परख', 'सुखदा', 'कल्याणी' और 'सुनीता' के संबंध में भी संदेह होने लगता है इन उपन्यासों में न तो कथा का अत्यधिक विस्तार ही है और न पात्रों की विविधता ही। इसका मूल कारण यह है कि प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में जैनेन्द्र एक नई प्रवृत्ति के जन्मदाता है। यह प्रवृत्ति सामाजिक चेतना के बदले व्यक्तिवादी चेतना की। जैनेन्द्र के उपन्यासों की दुनिया, पात्रों की बाहरी दुनिया नहीं है, बल्कि पात्रों की मन की अनेक अंतर्द्वंद्व की और आत्म-विश्लेषण की दुनिया है। यही कारण है कि जैनेन्द्र के उपन्यासों में बाहरी घटनाएं कम हैं, बाहरी कार्य व्यापार गौण है। फलतः इनके उपन्यासों का आधार फलक बहुत विस्तृत नहीं है। प्रेमचंद की तरह कथा का मात्र इनका उद्देश्य भी नहीं है ये मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं और इसीलिए इनके कथानक में विस्तार की जगह गहराई है।

जैनेन्द्र के उपन्यास में त्यागपत्र इनका सबसे छोटा उपन्यास है, लगभग 100 पृष्ठों का। बाहर से प्रतीत होता है कि यह एक लंबी कहानी है एक और बात है कि इस उपन्यास की भूमिका में कहानी शब्द का प्रयोग हुआ है "सर एम० दयाल जो इस प्रांत के चीफ जज थे और जो त्यागपत्र कई वर्षों से विरक्त जीवन बिता रहे थे। उनके स्वर्गवास का समाचार दो महीने हुए पत्रों में छापा था। पीछे कागजों में उनके हस्ताक्षर के साथ एक पाण्डुलिपि जो एक कहानी ही कहिए मूल लेख अंग्रेजी में है उसी का हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जाता है" जैनेन्द्र द्वारा प्रसंग में उपन्यास के बीच-बीच में भी त्यागपत्र के दूसरे प्रमुख पात्र प्रमोद के द्वारा कहानी शब्द का प्रयोग

Scanned with CamScanner